सफलता की कहानी

किसान का नाम – मालहो मुर्मू
पिता का नाम – निवाई मुर्मू
ग्राम – बादलगोड़ा
पंचायत – केन्दुआ
प्रखण्ड – डुमरिया

मालहो मुर्मू अनुसूचित जनजाति परिवार की है। इनके पति के हिस्से में मात्र 3.20 एकड़ जमीन है और इस जमीन पर कुछ साल पहले परंपरारिक तरीके से खेती करती थी। उसमें उपज ज्यादा नहीं हो रहा था और पारिवारिक आर्थिक स्थिति बहुत अच्छा नहीं था। एक दिन आत्मा के प्रसार कर्मी के सहयोग से चिगड़ी धान की सीधी रोपाई करने की जानकारी मिली। मालहो मुर्मू को धान के अलावा रबी मौसम में सब्जी, दलहन एवं तेलहन की खेती करने को प्रोत्साहित एवं तकनीकी सुझाव दिया गया। फलस्वरूप विगत 4 वर्षो से मालहो मुर्मू धान की खेती के अलावा अब रबी मौसम में चना और सरसों की खेती कर रही है।

चिगड़ी धान प्रभेद का बीज बेचकर 12,000/– रूपये कमाई है। डाली चना बेचकर 10,000/– रूपये मुनाफा हुआ। सरसों का साग एवं सरसों की खल्ली बेचकर 7,500/– कमाया है। मुली की खेती कर 15,000/– हजार रूपये का मुनाफा हुआ है। अभी मालहो मुर्मू गरमा में सब्जी की खेती करने वाली है।

आत्मा के प्रसार कर्मी द्वारा उन्हें सही समय पर खेती की तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन देने से मालहो मुर्मू को सालाना 60,000/– से अधिक का मुनाफा हो रहा है । अपनी छोटी–छोटी आर्थिक जरूरतों को वह पूर्ण कर पा रही है।

सालाना एक निश्चित कमाई का श्रोत होने से मालहो मुर्मू अपने पति निवाई मुर्मू के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रही है।

मालहो मुर्मू की सरसों की खेती